कृष्णा सोबती

प्रख्यात कहानीकार कृष्णा सोबती का जन्म 18 फरवरी, 1925, को गुजरात, पंजाब (अब पाकिस्तान) में हुआ था। उनकी शिक्षा लाहौर, शिमला और दिल्ली में हुई।

नयी कहानी आंदोलन में कृष्णा सोबती अकेली कहानीकार हैं जिन्होंने कम कहानियाँ लिखकर भी अपनी विशेष पहचान बनाई है। उनकी प्रकाशित पुस्तकें हैं:- 'डार से बिछुड़ी', 'मित्रो मरजानी', 'यारों के यार', 'तिन पहाड़, 'सूरजमुखी अंधेरे के', 'जिंदगीनामा', 'जिंदा रूख', 'दिलो-दानिश', (उपन्यास), 'बादलों के घेरे (कहानी संग्रह), 'सिक्का बदल गया', (कहानी) तथा 'हम हशमत' (संस्मरण), सोबती एक सोहबत (विविधा) इत्यादि। अपने कम लिखने के कारणों पर टिप्पणी करते हुए उन्होंने एक साक्षात्कार में कहा है,-'मुझ में एक गहरा ठंडापन है। कभी-कभार लिखने बैठ ही जाती हूँ तो वह मेरे निकट समूची प्रक्रिया का एक अंग बन जाता है। कुछ भी लिखना मेरे निकट एक गंभीर और जोखिम भरी स्थिति बन जाती है। इसलिए मैं अपने लेखक को कभी पटाती नहीं। दाँव पर नहीं लगाती। अपने से अलग हटकर मैं उसे दूसरा व्यक्ति समझती हूँ और उसकी इज्जत करती हूँ.....' (सारिका, जनवरी 1979)। वस्तुत: 'नई कहानी के बेहद आत्मपरकता वाले दौर में लेखक और भोक्ता के बीच की यह दूरी किसी हद तक आश्चर्यजनक लग सकती है। ऐसा नहीं है कि कृष्णा सोबती के अपने अनुभव और आग्रह उनकी कहानियों में न हों, लेकिन उनके आधार पर उनके जीवन-प्रसंगों में प्रवेश की वैसी छूट नहीं मिलती जैसी उस दौर के अन्य बहुत से लेखकों के साथ मिलती है। उनकी कहानियाँ उनके अनुभवों का ताप संजोए रखकर भी उन्हें आत्मवृत्तांत के रूप में लिए जाने की छूट प्राय: नहीं देती।' (हिन्दी कहानी का विकास–मधुरेश)

'नफ़ीसा', 'लामा', 'बादलों के घेरे', 'कुछ नहीं-कोई नहीं', 'दोहरी सांझ', 'पहाड़ों के साये तले', 'दो राहें: दो बाँहे', 'तिन पहाड़', 'बदली बरस गई',

Scanned by CamScanner

'गुलाबजल गंडेरियाँ', 'आजादी शम्मोजान' इत्यादि बेहद उल्लेखनीय कहानियाँ हैं जिनमें स्त्री-पुरुष संबंधों के विभिन्न आयामों से होते हुए पुरुष सत्तात्मक व्यवस्था में स्त्री की नियति को उसके परिवेशगत द्वन्द्वात्मक संबंधों के संदर्भ का अंकन करते हुए अविभाजित पंजाब और देश विभाजन की त्रासदी, यातनाओं और बिडंबनाओं को यथार्थता से चित्रित किया गया है। इस परिप्रेक्ष्य में 'सिक्का बदल गया', 'डरो मत', 'मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा,' और 'मेरी माँ कहाँ' जैसी कहानियाँ प्रासंगिक हैं। वास्तव में ये कहानियाँ विभाजन की पृष्ठभूमि पर मानवीय सदाशयता को गहरी संवेदनशीलता से अंकित करती हैं।

कृष्णा सोबती की प्रेम-संबंधी कहानियाँ अपने सारे रोमानी और भावुक मिजाज के बावजूद, इस तथ्य को नए सिरे से उद्घाटित करती हैं कि तन का धर्म मन के धर्म से अलग नहीं होता। नई कहानी आंदोलन के दौर में जैनेंद्र और अज्ञेय की मनोवैज्ञानिक कहानियों के विरुद्ध काफी कुछ लिखा गया। कृष्णा सोबती उसी परिवर्तित दृष्टि को रचनात्मक स्तर पर व्यक्त करती हैं।

असलियत में कृष्णा सोबती ने अपने कथा-साहित्य में स्त्री की बदलती हुई स्थिति से लेकर उसकी यातनाओं एवं संघर्षों का वास्तविक चित्रण प्रस्तुत किया है। उनके लेखन में पितृसत्तात्मक समाज के प्रपंचों और विरोधाभासों तथा पितृसत्तात्मक मूल्यों के नाम पर अस्तित्वहीन जीवन जीने वाली अभिशप्त स्त्री की अनेक मनोदशाओं का अच्छा खासा पर्दाफाश हुआ है। इस तरीके से कृष्णा सोबती एक प्रखर नारीवादी लेखिक के रूप में भी सामने आती हैं।

वस्तुतः कविता लेखन से शुरू होकर कथाकार बनने वाली कृष्णा सोबती का साहित्य बेहद दिलचस्प और विचारोत्तेजक है जिनमें एक खास पंजाबी लहजा और तेवर है जिसके फलस्वरुप उनमें एक विलक्षण खुलापन आ गया है। नारी-जीवन के अतरंग पहचान उनमें सुरक्षित हो गये हैं। लोक जीवन और उसके सांस्कृतिक परिवेश को रेशा-रेशा खोलने-वाली कलादृष्टि और विलक्षण भाषा शैली सम्पन्न लेखिका कृष्णा सोबती को 'जिंदगीनामा' के लिए 1980 का साहित्य अकादमी पुरस्कार और 1981 का साहित्य शिरोमणि पुरस्कार प्राप्त हुआ। हिन्दी अकादमी, दिल्ली के 'शलाका सम्मान' (2000-2001) साथ ही इन्हें अनेकों पुरस्कार एवं सम्मान प्राप्त हो चुके हैं।

Scanned by CamScanner

कहानी का परिचय

'सिक्का बदल गया' उन कहानियों में शामिल है जो विभाजन की विदुपताओं, उसकी त्रासदी जमीन से उखड़ने की पीड़ा, अपने लोगों का बदल जाना आदि प्रभाव का मनोवैज्ञानिक दृष्टि से पाठक पर अपना प्रभाव छोड़ती है। 1947 की आजादी की कीमत भारत पाक विभाजन के रुप में हुआ। 'सिक्का बदल गया' कहानी इसी विभाजन की त्रासदी को बयान करती है। जिसमें लेखिका ने शाहनी की मन: स्थिति के माध्यम से पाकिस्तान में बरसों से रह रहे एक समृद्ध परिवार के उस दर्द को बयां किया है जो सत्ता परिवर्तन होने के बाद के बदलावों को महसूस करती है। जहाँ पर लोग खुशी खुशी साथ में रहते थे सबके दुख दर्द का हिस्सा बनते थे लेकिन सत्ता बदलने के बाद लोगों का मन भी किस प्रकार से बदल जाता है। इनके मन में आये इन बदलाव का बहुत ही मार्मिक चित्रण कहानीकार ने किया है।

सिक्का बदल गया कहानी विभाजन की पृष्ठभूमि पर लिखी गयी बहुत ही मार्मिक कहानी है। जिसमें कृष्णा सोबती ने कहानी की मुख्य पात्र बूढ़ी शाहनी की मन:स्थिति के माध्यम से यह दिखाने का प्रयास किया है कि सन् 1947 का विभाजन जिसमें हिन्दुस्तान की जमीन के दो टुकड़े कर पाकिस्तान और भारत का निर्माण हुआ था यह सिर्फ दो देशों का ही बंटवारा नहीं हुआ था बल्कि यह लोगों के दिलों का बटवारा था। उस समय जो विभाजन की रेखा खींची गई वह आज भी लोगों के दिलों में नासूर बन कर चुभती है।

यह विभाजन उस अद्यपके फोड़े के समान था जो आज भी मवाद बन कर लोगों को कसक ही देता है। लोगों में आये इस बदलाव का कसक लेखिका 'सिक्का बदल गया' के कहानी में शाहनी के माध्यम से दर्शाया है। जो शाहनी लोगों के सुख दुख में काम आती थी। आज वह बिल्कुल अकेली है। वह अपना गाँव छोड़ने के लिए विवश है वक्त बदलते ही लोग बदल गये हैं। जिन्हें शाहनी ने वक्त बे वक्त पनाह दिया था आज वे लोग ही उसे उसके घर से बेघर कर रहे हैं वक्त के बदलते ही वे लोग भी बदल गये। जो नौकर शाहनी का लाडला था आज वह समय बदले ही उस शाहनी को मारने की सोचने लगा जो शेरा जब शाहनी से डांट खाकर हवेली में भूखा प्यासा पड़ा रहता था तो यही शाहनी उसे उस समय दुलारती थी, खाने पीने को देती थी। पूरा गांव ही उनका परिवार

Scanned by CamScanner

था। बूढ़ी शाहनी ने ये कब सोचा था कि जो गांव वाले उसके इतने निकट थे वे ही उसे अपने से दूर कर देंगे। विभाजन के समय में दिलों का जो बंटवारा था वह उसे बहुत दिनों से महसूस कर रही थी। "शाहनी ने कपड़े पहने इधर-उधर देखा, कहीं किसी की परछाई तक न थी। पर नीचे रेत में अगणित पांवों के निशान थे। वह कुछ सहम सी उठी। आज इस प्रभात की मीठी निरवता में न जाने क्यों कुछ भयावना-सा लग रहा है। वह पिछले पचास वर्षों से यहां नहाती आ रही हैं कितने लम्बा अरसा है। शाहनी ने यह कभी नहीं सोचा था कि वह जो कुछ आभास कर रही है वह कुछ घटेगा भी। वह महसूस करती हैं कि वह एकाएक अपने ही समाज, अपने ही घर अपने ही देश में परायी हो गयी है।"

विभाजन के रुप में भारत और पाकिस्तान ने सबसे बड़ी त्रासदी झेली थी। एकाएक वे लोग जो सैकड़ों वर्षों से अपनी संस्कृति और परंपरा को साथ-साथ निभाते आये थे एक राजनीतिक फरमान के चलते एक दूसरे से अलग कर दिये गये। कृष्णा सोबती की कहानी 'सिक्का बदल गया' दरअसल राजनीतिक सत्ता परिवर्तन या बदलाव को भी ही संकेत नहीं करती है बल्कि वह मनः स्थिति में आए बदलाव को भी बहुत ही मार्मिक ढंग से संकेत करती है। कैसे शेरा हुसैना और गांव के वे सभी लोग जिन्हें शाहनी ने पाला-पोसा था अचानक से उसे पराया कर देते है। वह यह नहीं जानती थी कि सिक्का बदल गया है। जो लोग शाहजी के रहते उनके आगे पीछे घूमते थे आज वे लोग ही आखे तरेर शाहनी के आगे खडे हैं "देर हो रही थी। थानेदार दाउद खाँ जरा अकड़कर आगे आया और ड्योढ़ी पर खड़ी जड़ निर्जीव छाया को देखकर ठिठक गया वही शाहनी है, जिसके शाह जी उसके लिए दरिया के किनारे खेमे लगवा दिया करते थे। यह तो वही शाहनी है, जिसने उसकी मंगेतर को सोने के कनफूल दिए थे मुँह दिखाई में अभी उसी दिन जब वह 'लीग' के सिलसिले में आया था तो उसने उद्दंडता से कहा था, 'शाहनी भागोवाल मसीत बनेगी, तीन सौ रुपया देना पडेगा।' शाह जी ने अपने उसी सरल स्वभाव से तीन सौ रुपये आगे रख दिये थे और आज....?"

'सिक्का बदल गया' कहानी विभाजन के दर्द को समेटे हुए है इस काहनी का उद्देश्य सिर्फ भारत और पाकिस्तान के हिन्दू और मुस्लिम परिवार के दर्द अपनी धरती अपने लोगों को छोड़ने की पीड़ा का ही बयान करना नहीं है बल्कि सत्ता का सिक्का बदलते ही अपने साथ के लोगों का व्यवहार कैसे बदल गया है उसका मर्मस्पर्शी चित्रण करना कहानी की अपनी कला है जो अन्य कहानियों से उसे बिल्कुल अलग खड़ा करता है।

Scanned by CamScanner

"जो कुछ भी हो रहा है अच्छा नहीं। शेरे, आज शाहजी होते तो शायद कुछ बीच-बचाव करते। पर....." शाहनी कहते कहते रुक गई। आज क्या हो रहा है! शाहनी को लगा जैसे जी भर-भर आ रहा है। शाहनी को बिछुड़े कई साल बीत गए, पर-पर आज कुछ पिघल रहा है-शायद पिछली स्मृतियां.....आँसुओं को रोकने के प्रयत्न में उसने हुसैना की ओर देखा और हल्के से हंस पड़ी। और शेरा सोच रहा है, क्या कह रही हैं शाहनी आज! आज शाहजी क्या कोई भी कुछ नहीं कर सकता। यह होके रहेगा-क्यों न हो? हमारे ही भाई-बन्दों से सूद ले-लेकर शाहजी सोने की बोरियाँ तोला करते थे। प्रतिहिंसा की आग शेरे की आँखों में उतर आई। गँड़ोस की याद आ गई। शाहनी की ओर देखा—नहीं-नहीं, शेरा इन पिछले दिनों में तीस-चालीस कत्ल कर चुका था।"

'सिक्का बदल गया' कहानी हिंसा, कत्ल दंगों का चित्रण या विवरण ही नहीं देता बल्कि वह विभाजन के दौरान हुए मानवीय संवेदनाओं के ह्रास और नैतिक मूल्यों के पतन की ओर संकेत करते हुए हमारा ध्यान रिश्तों में आए बदलाव की ओर खींचती है। इस कहानी का लक्ष्य कहानी की मुख्य पात्रा शाहनी के माध्यम से यह दर्शाना रहा है कि राजनीतिक सत्ता परिवर्तन ने किस प्रकार मन: स्थिति में परिवर्तन ला दिया है। जो लोग सब कुछ भुलाकर स्वतंत्रता संग्राम में एक साथ कूद पड़े थे आज वे एक दूसरे के दुश्मन बन गये है।

मानवीय रिश्तों को उन्होंने भुला दिया है एक दूसरे को पराया कर दिया। विभाजन में हुई राजनीतिक तोड़ फोड़ से ज्यादा लोगों की मानसिक और नैतिक मूल्यों की तोड़फोड़ हुई। जो लोगों शाहनी से हमेशा बरकत पाते थे आज वे बिल्कुल बदल गये है वे कहते हैं हम क्या कर सकते हैं सिक्का ही बदल गया है। ट्रक आ गयी है। यही बात गांव में फैल गयी। लाह बीबी ने कहा आज तक ऐसा कभी नहीं हुआ न कभी सुना अन्धेरा ही पड़ गया है। आज सारा गांव शाहनी को छोड़ने के लिए इकट्ठा है। जो गांव कभी उसके इशारे पर नाचता था जिसे उसने अपने नाते रिश्तों से कम नहीं समझा था। अगज वे कहते हैं रब को यही मंजूर था। "शाहनी का घर से निकलना छोटी सी बात नहीं। गांव-का-गांव खड़ा है हवेली के दरवाजे से लेकर उस दारे तक जिसे शाहजी ने अपने पुत्र की शादी में बनवा दिया था। गांव के साथ फैसले सब मशविरे यहीं होते रहे है इस बड़ी हवेली को लूट लेने की बात भी यहां सोची गई थी। यह नहीं की शाहनी कुछ न जानती हो। वह जानकर भी अनजान बनी रही उसने कभी बैर नहीं जाना। किसी का बुरा नहीं किया लेकिन बूढ़ी शाहनी यह नहीं जानती थी कि सिक्का बदल गया है....."

Scanned by CamScanner

यह कहानी धरती से उखडने की पीड़ा को बहुत ही मार्मिक ढंग से शाहनी के माध्यम से उठाती है। जब अपना घर बार सब कुछ छूटता है तो व्यक्ति की क्या मन: स्थिति होती है इसका बयान यह कहानी करती है। जिस घर में वह रानी बनकर आई थी आज वह पराई हो गयी। आज उसे अपना सब कुछ छोड़ना पड़ रहा है। अन्न जल सब कुछ अब उसका यहां से उठ गया। उसका ऊँचा चबूतरा, बैठक 'पसार' सब कुछ एक-एक करके उसकी बूढ़ी आँखों के सामने घूमले लगा। वह समझ गई वक्त ही ऐसा है। राज पलट गया सिक्का बदल गया। वह तो मैं वहीं छोड़ आई। और शाहजी की शाहनी की आँखें गीली हो गईं।

व्यक्ति का असली सोना चाँदी उसका अपना घर और जमीन जायदाद होती है। जहां वह वह अपना सारा जीवन गुजारता है वही उसका सब कुछ होता है। जब शाहनी से दाऊद खां कहता है कि कुछ नकदी और सोना चाँदी रखले वक्त का कुछ पता नहीं तब वह कहती है कि मेरा सोना तो एक-एक करके जमीन में बिछा है अच्छा वक्त देखने के लिए क्या मैं जिंदा रहूंगी। ये सब तुम सब रखो बच्चा।

यह कहानी विभाजन के उस पहलू को दिखाती है जिसमें लोगों की संवेदना मर चुकी है इंसान इंसान नहीं रहा है वह हैवान बन चुका है न तो उन्हें बच्चे दिखते हैं न बूढ़े उन्हें सिर्फ दिखता है हिन्दू और मुसलमान। 1947 का विभाजन कैंसर के समान एक ऐसा रोग था जो दिनों दिन बढ़ता ही गया और आज हमारे समाज को इतना खोखला कर दिया है कि वह खाई पटने की बजाय और बढ़ती जा रही है।

विभाजन ने सिर्फ शाहनी को ही अपनी धरती से हीं नहीं उखाड़ फेंका बल्कि न जाने कितनी शाहनी ने इस दर्द को झेला और उससे रुबरु हुए है। कृष्णा सोबती ने इस कहानी के माध्यम से इस समस्या को बहुत ही बारीकी से उठाया है। लेकिन साथ ही उन्होंने यह भी दर्शाया है कि लोगों की मानवीयता अभी भी समाप्त नहीं हुई है जब शाहनी जाने लगती है तो सारा गांव उसे छोड़ने आता है यहां तक कि बूढ़ी औरतें शाहनी को जाते देख गले लगकर रोने लगती हैं। लेकिन किया ही क्या जा सकता है समय ही बदल गया राज पलट गया सिक्का ही बदल गया।

Scanned by CamScanner